भजन

तर्ज जिन्दगी की ना टूटे

मेरे सतगुरु ये सेवा तेरी, सबसे बढ़िया और सबसे खरी
सेवा का न मोल कोई, अनमोल है सेवा तेरी

1) सेवा का यह अवसर मिला, धाम में तो यें सेवा नहीं
धन–धन वो साथ हुए, सेवा दिल दे के जिसने करी

2) इसमें हैं नफा ही नफा, नुकसान जरा भी नहीं
तन मन धन से सेवा करी, पहचान के धाम धनी

3) सतगुरु मेरे धाम धनी, उनसे निसबत अखंड है मेरी
आए साथ हमारे हैं वो, माया में है देह धरी

4) सेवा सनमुख जन्म लों, लिया हुकम सिर चढ़ाएं
अब न पीछे हटेंगे कभी, सेवा सुखदायी हैं ये धनी